ड्रिसी जीउ ठरे, नारद निजु भगुतनि खे,
मां धरियां ध्यानु तंहिंजो, जो मुंहिंजो ध्यानु धरे,
ओति पिरोति ज़ाणी करे, थियां कीन परे,
सामी कीन सरे, बिना भगुति आहार जे.

सच्चे भक्तों की भक्ति अथवा प्रेम से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु नारद मुनि से क्या कहते हैं, इसका उल्लेख करते हुए सामीजी ने भगवान विष्णु के ही कथन को शब्दांकित किया है। भगवान विष्णु कहते हैं, हे नारद! अपने प्रिय भक्तों को देखकर मेरा मन आनंद और संतोष से भर जाता है। मैं उन्हीं भक्तों का स्मरण करता हूँ, जे मेरा स्मरण करते हैं। भक्ति भाव से ओत-प्रोत ऐसे भक्तों से कभी भी दूर नहीं रहता। हे नारद! भक्ति रूपी आहार के सिवाय मैं रह नहीं सकता।

सगुण परमात्मा और जीवात्मा (मनुष्य) के निष्काम, निर्मल प्रेम-संबंध को 'भक्ति' कहा गया है। भगवान में पूर्ण आस्था रखकर आराधना करने वाला 'भक्त' कहा जाता है। भक्तों के चार प्रकार हैं- (1) **अथर्थी-** सत्ता, संपत्ति, संतान आदि प्राप्त करने हेतु भक्ति करने वाला। (2) **आर्त-** दुःखों के कारण व्याकुल होकर दुःखों से मुक्ति पाने की इच्छा से भक्ति करने वाला । (3) **जिज्ञासु-** भगवान के स्वरूप को जानने की इच्छा करने वाला(4) **ज्ञानी-** ब्रह्म और जीव की एकता का ज्ञान हो जाने के कारण उस अनुभूति का अनुभव करने की तीव्र इच्छा से भगवान की अनन्य भक्ति करने वाला भक्त। गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि इन चारों भक्तों में 'ज्ञानी भक्त' मेरी आत्मा है।

उपर्युक्त श्लोक में भगवान विष्णु अपने प्रिय भक्त नारदजी को अपने मन की एक बात बताते हैं। देवर्षि नारद को भगवान का मन कहा गया है। नारद मुनि ब्रह्मा जी के मानस-पुत्र थे। वे परमज्ञानी प्रेमी भक्त और दिव्य ऋषि थे। नारदजी की कृपा से ही संसार को श्रीमद्‌भागवत एवं वाल्मीकि रामयण जैसे अनुपम ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। ऐसे नारद मुनि से भगवान विष्णु संतोष-भाव से कहते हैं कि अपने सच्चे और प्रिय भक्तों को देखने से मुझे अत्यधिक आनंद और संतोष प्राप्त होता है। (भक्तों को भी परमेश्वर के दर्शन करने से अलोकिक आनंद का अनुभव होता है और यहाँ भगवान को भी भक्तों के दर्शन से आनंद का अनुभव होता है।) भक्ति ही मेरा भोजन है, जिसके बिना मैं रह नहीं सकता। परमेश्वर तो भक्तों के हृदय में ही निवास करते हैं।

नाहं वसामि वैकुंठे, योगिनां हृदये न च।
मद्‌भक्तायत्र गायन्ति, तत्रतिष्ठिामि नारद ।।

■